خطبۂ جمعہ کا پیغام

(مع نقشہ اوقات نماز)

खुतबा-ए जुमा का पैग़ाम

(नमाज़ों के औक़ात के साथ)

आप की आसानी के लिए इस बुकलेट में बारह महीनों की नमाज़ों के औक़ात दिये गये हैं, यह नक़्शा देहली के औक़ात पर बनाया गया है। बराए महरबानी अपने इलाक़े के ऐतेबार से वक़्त घटायें / बढ़ायें।

Agartala
SR-1H08M SS-1H05M

Ahmedabad
SR+27M SS +12M

Aizawl
SR-52M SS -1.08M

Amritsar
SR+06M SS+14M

Bangaluru
SR+19M SS-21M

Bhopal
SR+07M SS-08M

Calicut
SR+27M SS-15M

Chandigarh
SR+-1M SS+05M

Chennai
SR+08M SS-26M

Gurgaon
SR+02M SS+01M

Guwahati
SR-54M SS-1H04M

Imphal
SR-1H01M SS1H12M

Itanagar
SR-1H03M SS-1H07M

Jaipur
SR+09M SS+04M

Kolkata
SR-36M SS-52M

Lucknow
SR-12M SS-17M

Mumbai
SR+30M SS+05M

Patna
SR-27M SS-26M

Raipur
SR-07M SS-27M

Ranchi
SR-25M SS-39M

Shillong
SR-54M Ss1 H02M

Shimla
SR-03M SS+04M

Sikkim
SR-1H03M SS1H11M

Srinagar
SR+02M SSSS+19M

जुमा के ख़ुतबे का

अहम पैग़ाम

मुसलमानों को अल्लाह के एहकामात

पुस्तक का नाम : जुमा के ख़ुतबे का अहम पैग़ाम

लेखक : अदील अखतर

मूल्य : जनहित में अमूल्य प्रकाशन

प्रकाशक : दावत विभग,

ज़कात फ़ाउण्डेशन आफ इण्डिया

{Propagation of Scriptural & Prophetic Tradition (PSPT)}

मुद्रक : हुमाम पब्लिकेशन्स

2074 कूचा नाहर ख़ान,चीलान स्ट्रीट

दरिया गंज, नयी दिल्ली–110002

मिलने का पता : A-11, Khajoori Road, Jogabai Extention

Jamia Nagar, New Delhi - 110025

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَآئِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝٩٠

इन्नल्लाहा यामुरु बिलअद्ल वल अहसान व ईताइ ज़िल कुर्बा व यनहा अनिल फ़हशाइ वल मुनकरि वल बगयि यईजुकुम लअल्लकुम तज़क्करुनः

अल्लाह तआला अद्ल करने, अहसान करने और रिश्तेदारों को देते रहने का हुक्म देता हैं और फ़हश (बेशर्मी), मुनकर (बुराई) व बग़यि (जुल्म) से मना करता हैं। (१६:६०)

यह कुर्आन पाक की वह मशहूर आयत है जो हम हर जुमे के ख़ुत्बे में सुनते हैं। इस आयत को जुमे के ख़ुत्बे में शामिल करने की वजह यह है कि यह हमारे व्यवहार और कार्यशैली के लिए अल्लाह तआला का एक बहुत अहम फ़रमान है। हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसूद (रज़िअल्लाहुअन्हु) के अनुसार यह कुरआन की ऐसी आयत है जिसमें कुरआन का पूरा पैग़ाम सिमट आया है। (तफ़सीर इब्ने कसीर)।

इस आयत में अल्लाह तआला ने तीन तरह का बर्ताव करने का हुक्म दिया है और तीन तरह के बर्ताव से मना किया है।

आयत के पहले हिस्से में अल्लाह तआला हमें तीन अच्छे काम करते रहने का हुक्म देते हैं :

1. हम 'अद्‌ल' करें : अद्‌ल करने का मतलब इंसाफ़ से काम लेना है, लेकिन असिल में यह इंसाफ़ से भी बड़ी बात है। अद्‌ल से काम लेने का मतलब यह है कि जिस बात का जितना महत्व हो उसको उतना ही महत्व दिया जाए, जिसका जितना हक़ है उसको उतना ही हक़ दिया जाए। जैसे कि एक आदमी पर दूसरे सभी लोगों के साथ भलाई का व्यवहार करने की जिम्मेदारी है लेकिन अगर कोई व्यक्ति अपने मां–बाप के साथ भी उतनी ही भलाई का व्यवहार करे जितना कि वह दूसरों के साथ करता है तो इसका मतलब यह होगा कि वह मां–बाप के हक़

को दूसरों के बराबर ही मानता है जबकि ऐसा मानना मां–बाप के साथ अन्याय है, इसलिए इसे अद्‌ल का व्यवहार नहीं कहा जाएगा।

अल्लाह तआला हमें जीवन के हर मामले में अद्‌ल से काम लेने का हुक्म देते हैं। अगर कोई मुसलमान मर्द या औरत अपने व्यवहार में अद्‌ल को नहीं अपनाता/ती है और अद्‌ल के अनुसार बर्ताव नहीं करता/ती है तो वह निश्चित रूप से अल्लाह की नाफ़रमानी करता/ती है। जबकि अल्लाह अपने नाफ़रमान बन्दों से खुश नहीं होता और उनकी इबादतें भी कुबूल नहीं करता।

इंसाफ और अद्‌ल वह चीज है जिसे दुनिया में क़ायम करने के लिए अल्लाह तआला ने अपने रसूलों को दुनिया में भेजा। सूरह अलहदीद (57) की आयत 25 में अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

हमने अपने रसूलों को खुली हुई निशानियों के साथ भेजा और उनके साथ लोहा उतारा और मीज़ान (सही व गलत की कसौटी) उतारी ताकि लोग इंसाफ पर क़ायम हो जाएं।

जीवन भर हक़ व इंसाफ़ की गवाही देते रहना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है। अल्लाह तआला का फ़रमान है कि ऐ ईमान वालो, अद्ल व इंसाफ़ पर मज़बूती से जम जाने वाले बनो और अल्लाह के लिए सच्चाई के गवाह बनो, चाहे यह गवाही तुम्हारे अपने, तुम्हारे मां–बाप और रिश्तेदारों के ख़िलाफ़ ही क्यों न हो। (4:135)

2. हम 'अहसान' का बर्ताव करें : अहसान का मतलब बहतर या बहतरीन तरीक़े से मामलों को अंजाम देना है। चाहे मामला इबादत का हो या आम जीवन में अपने व्यवहार या बर्ताव का हो। इस आयत में अहसान का यह हुक्म निश्चित रूप से दूसरे इंसानों के साथ अहसान का बर्ताव करने के बारे में है।

अहसान अरबी भाषा का शब्द है जिसका मूल ह–स–न है जिसका अर्थ होता है ख़ूबसूरत या बहतर होना, और जब कोई अमल या चीज़ किसी दूसरे अमल या चीज़ से बहतर होती है तो उसे अहसन कहते हैं। लिहाज़ा,

जब इंसान इस बात की कोशिश करे कि उसका अमल हर मामले में अहसन (बहतर से बहतर) हो तो इसी कोशिश को अहसान कहा जाता है। हदीस शरीफ़ के मुताबिक़ कोई आदमी (या औरत) इस तरह नमाज़ अदा करने की कोशिश करे कि वह नमाज़ का हक़ अदा कर सके और नमाज़ के हर *रुक्न* (क्रिया) को बहतरीन तरीक़े से अदा करे तो इसे अहसान वाली नमाज़ कहते हैं।

दूसरों के साथ मामला करने में अहसान का व्यवहार करने का मतलब यह है कि आदमी अपने उपर लागू होने वाली जिम्मेदारी से भी ज़्यादा करने की कोशिश करे। जैसे, अगर कोई दुकानदार सामान तौलते या नापते समय माल खींच लेता है, डण्डी मारता है और कम नापता/तौलता है तो वह गुनाह और अपराध करता है, और अगर वह पूरा पूरा तौल कर/नाप कर देता है तो वह इंसाफ़ व अद्ल वाला जायज़ मामला करता है, लेकिन अगर वह कुछ बढ़ा कर नाप/तौल देता है तो समझो वह अहसान का

मामला करता है। कोई कर्मचारी अगर अपना फ़र्ज़ और ज़िम्मेदारी पूरी पूरी अदा करता है और बिल्कुल नहीं चाहता कि रत्ती भर समय या मेहनत अधिक करे तो वह अहसान वाला व्यवहार नहीं करता। कोई मालिक (एम्पलॉयर) अगर अपने कर्मचारियों (एम्प्लॉईज़) को निर्धारित वेतन से अधिक कभी कुछ नहीं देना चाहता और एक खुरदुरा ग़ैर–हमदर्दी वाला रवय्या रखता है, समय या मेहनत की थोड़ी सी कमी पर उसके वेतन में कटोती कर लेता है तो यह भी अहसान के इस आदर्श चरित्र से वंचित है। अहसान की एक मिसाल यह है कि ज़रूरत पड़ने पर कोई क़र्ज लेने वाला क़र्ज़ वापसी के समय आभार व्यक्त करे और कोशिश करे कि अपनी मर्ज़ी व खुशी से वापस की जानेवाली चीज़ या रक़म को बढ़ा कर या किसी उपहार के साथ वापस करे। असिल में, अहसान अपने हक़ में से दूसरे को स्वेच्छा से कुछ देने का नाम है और इसका मक़सद दूसरे इंसान का दिल जीतना और उसे खुश करना होता है, उसके उपर अपनी बड़ाई जताने की

भावना इस काम में मौजूद न हो, बल्कि वह इसके बदले अल्लाह से सवाब की उम्मीद रखे।

अहसान का यह व्यवहार इंसानी समाज में एक दूसरे के लिए सौहार्द और प्रेम की भावना को बढ़ाता है और एक दूसरे पर विश्वास को मज़बूत करता है। क्योंकि जब हर व्यक्ति दूसरे के साथ भलाई और अहसान वाला व्यवहार करेगा तो दूसरों के हाथों स्वंय को मूर्ख बनाए जाने, वंचित किए जाने और नुक़सान पहुंचने की आशंका नहीं रहेगी। इस तरह समाज मज़बूत होता है और तरक़्क़ी करता है। इसलिए हम सब को यह याद रखना चाहिए कि अल्लाह तआला हमें हर मामले में अहसान से काम लेने का हुक्म देते हैं।

3. हम अपने रिश्तेदारों के साथ अच्छा व्यवहार करें : रिश्तेदारों के साथ सम्पर्क बनाए रखने, सद्व्यवहार करने और दानशीलता का मामला करने की बहुत अधिक ताकीद कुरआन में की गयी है। इस

आयत की व्याख्या में मौलाना अबुल आला मौदूदी (रहमतुल्लाहि–अलैहि) लिखते हैं कि "इसका मतलब केवल यही नहीं है कि आदमी अपने रिश्तेदारों के साथ अच्छा बर्ताव करे और दुख–सुख में उनके साथ शामिल हो, और जायज हद में उनकी मदद व हिमायत करे। बल्कि इसका अर्थ यह भी है कि हर मालदार अपने माल पर केवल अपना और अपने बाल बच्चों का ही हक़ न समझे बल्कि उसमें अपने रिश्तेदारों के हक़ को भी स्वीकार करे। अल्लाह की शरीअत हर परिवार के मालदार व्यक्तियों को इस बात का ज़िम्मेदार बनाती है कि वे अपने परिवार के लोगों को परेशानियों से जूझने के लिए न छोड़ दें। अल्लाह की नज़र में किसी समाज की इससे बुरी कोई बात नहीं कि उसके अन्दर एक व्यक्ति ऐश कर रहा हो और उसी के परिवार में उसके अपने भाईबन्द जिंदगी की बुनियादी जरूरतों से महरूम रहें। शरीअत के अनुसार हर ख़ानदान के ग़रीब लोगों का पहला हक़ अपने ख़ानदान के मालदार लोगों पर है और हर ख़ानदान

के मालदार लोगों पर पहला हक़ उनके अपने ग़रीब रिश्तेदारों का है।" (तफ़हीमुल कुर्आन)

हमें यह बात भी समझना चाहिए कि केवल माल से मदद कर देना ही काफ़ी नहीं है बल्कि अपने समय, अपनी सलाहियत, अपनी शक्तियों, प्रभाव व रसूख और अपने मोहब्बत के जज़्बे से भी रिश्तेदारों को जायज फ़ायदा पहुंचाना हमारे ऊपर वाजिब है।

आयत के दूसरे हिस्से में अल्लाह पाक हमें तीन बुरे कामों से बचते रहने का हुक्म देते है:-

1. **हम 'फ़हश' कामों/बातों से बचें :** फ़हश बेशर्मी को कहते हैं। फ़हश कामों या बातों का सम्बंध इंसान की काम भावना से है। काम भावना (शहवत) इंसान के अन्दर अल्लाह तआला ने इंसानी नस्ल को आगे बढ़ाने के मक़सद से रखी है जिसके लिए निकाह के माध्यम से जायज़ रिश्ता क़ायम करने का हुक्म है। इस क़ानून और जायज़ रिश्ते के दायरे से बाहर काम भावना को

जताने वाली हर वह छोटी बड़ी बात जो एक शरीफ़ इंसान को नहीं करनी चाहिए वह फ़हश है। फ़हश से रोकने वाली नैतिक भावना को हया कहते हैं, इसलिए हर फ़हश बात बे–हयाई (बेशर्मी) होती है और बे–हयाई को ज़ाहिर करने वाली हर बात फ़हश होती है। जैसे गाली देना भी एक बड़ी फ़हश बात है क्योंकि गाली देने वाला बुरा इंसान किसी की मां, किसी की बहन के या ख़ुद अपने और अपने मां–बाप के गुप्तांगों की ओर इशारा करता है और गालियां देने की आदत रखने वाला बेशर्म इंसान जाने अनजाने खुद अपनी मां, अपनी बहन और अपने बाप दादा के लिए घटिया इशारे और अपराधिक इरादे को जताता है। लेकिन अफसोस की बात है कि गाली देने की आदत हमारे समाज में इतनी आम है कि लोग उसे गुनाह समझने का भी एहसास नहीं रखते। बहुत ही शर्म की बात यह है कि मस्जिदों में बैठने वाले और जबान से अल्लाह का जिक्र करने वाले लोगों में भी ऐसे लोग होत हैं कि ज़रा सी बात पर कोई गाली देना उनके लिए बड़ी

बात नहीं होती। ऐसे लोगों को समझना चाहिए कि अल्लाह ने फ़हश बात करने और कहने से मना किया है और गाली देना बहुत फ़हश बात है।

इसके अलावा ऐसी बातचीत, ऐसे जुमले, इशारे और संकेत या ऐसी हरकतें भी जो शर्म व हया के ख़िलाफ़ हों और जिनका सिरा कहीं न कहीं जाकर काम भावना की ग़ैर–कानूनी हरकत से मिलता हो, फ़हश है। नाजायज़ प्रेम सम्बंधों (इश्क़बाजी) की प्रेरणा देने वाली ग़ज़लें, अफसाने और उपन्यास भी फ़हश लेखन की श्रेणी में आते हैं और जिन शेअरों, अफसानों और नाविलों आदि में काम उत्तेजना पैदा करने वाली हरकतों के सीन होतें हैं वे तो निश्चित रूप से फ़हश ही हैं। आजकल सिनेमा की अधिकतर फ़िल्में और टीवी सीरियल फ़हश होते हैं। अब तो बच्चों के लिए बनने वाले कार्टूनों में भी फ़हश क्रियाएं शामिल होने लगी हैं जिनसे बच्चों को बचाना ज़रूरी है।

अल्लाह तआला ने खुले और छिपे फ़हश कामों व बातों से बचने का हुक्म दिया है। कुरआन

करीम में अल्लाह तआला का फ़रमान है कि ***फ़हश कामों/बातों के क़रीब भी न जाओ चाहे वे खुले हों या छुपे (६:१५१)।***

2. हम 'मुनकर' से बचें : *मुनकर* और *मारूफ़* एक दूसरे के विलोम शब्द हैं। हर भली और अच्छी बात मारूफ़ होती है, मारूफ़ का मतलब ही होता है कि किसी बात के अच्छी और भली बात होने में किसी को कोई शक न हो। हर आदमी और हर समाज उसे अच्छा और भला काम समझता हो। इसके विपरीत जो बातें और काम आम तौर से बुरे समझे जाते है उन्हें मुनकर कहा जाता है। कुरआन व हदीस की भाषा में हर वह बात और काम मुनकर है जिसे अल्लाह और उसके रसूल ने नापसन्द किया है और उसे न करने की तालीम दी है। ये बातें आम तौर से वही हैं जिन्हें इंसान का दिल, उसका ज़मीर व उसकी अंतरात्मा बुरा कहती है। झूट बोलना, धोका देना, किसी को नुक़सान पहुंचाना, दूसरों का माल छीन लेना या धोके से हथिया

लेना, चोरी करना, ग़ैर कानूनी काम करना, रिश्वत लेना, वेतन लेकर काम न करना या काम लेकर वेतन न देना या क़र्ज लेकर वापिस न करना जैसी सारी बातें जिनको बुरा कहने और समझने के लिए किसी तर्क, विचारधारा और शिक्षा व फ़लसफ़े की ज़रूरत नहीं, सब मुनकर हैं।

अल्लाह तआला इस आयत में मुनकरात से मना करते हैं। हम मुसलमानों को अल्लाह ने मुनकरात को मिटाने तथा भलाईयों को फैलाने के लिए चुना है। अल्लाह तआला कुरआन पाक में ईमान वालों से फ़रमाते हैं कि ***तुम सबसे बहतर क़ौम हो जिसे इंसानों के लिए पैदा किया गया है कि तुम अच्छे कामों व बातों का हुक्म दो और बुरे कामों व बातों से रोको (३:११०)।***

3. हम 'बग़यि' से बचें : जुल्म व ज़्यादती या जब्र व सितम करने को अरबी में बग़यि कहते हैं। दूसरे इंसानों पर अपना ज़ोर चलाना, उनका उत्पीड़न करना, उन्हें सताना, दबाना, मारना पीटना, उनसे ज़बरदस्ती

काम लेना, उनकी आज़ादी छीन लेना, उनका अपमान करना ऐसे सारे काम बग़यि की परिभाषा में आते हैं। अल्लाह तआला अपने बन्दों को हुक्म देते हैं कि वे जुल्म व उत्पीड़न करने से दूर रहें।

अल्लाह तआला हम सब को हर हफ़्ते याद दिलाए जाने वाले कुरआन के इस पैग़ाम को समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक दें। आमीन

December دسمبر

وقت عشاء	وقت مغرب	وقت عصر	وقت ظہر	طلوع آفتاب	وقت فجر	تاریخ
گھنٹہ منٹ	گھنٹہ منٹ	گھنٹہ منٹ	گھنٹہ منٹ	گھنٹہ منٹ	گھنٹہ منٹ	
7:47	5:24	3:47	12:10	6:55	5:32	1
7:47	5:24	3:47	12:10	6:56	5:33	2
7:47	5:24	3:47	12:11	6:57	5:33	3
7:47	5:24	3.47	12:11	6:58	5:34	4
7:48	5:24	3:47	12:11	6:58	5:35	5
7:48	5:24	3:47	12:12	6:59	5:35	6
7:48	5:24	3:48	12:12	7:00	5:36	7
7:48	5:24	3:48	12:13	7:00	5:37	8
7:49	5:25	3:48	12:13	7:01	5:38	9
7:49	5:25	3:48	12:14	7:02	5:38	10
7:49	5:25	3:48	12:14	7:02	5:39	11
7:49	5:25	3:48	12:14	7:03	5:39	12
7:49	5:25	3:49	12:15	7:04	5:40	13
7:50	5:26	3:49	12:15	7:04	5:40	14
7:50	5:26	3:49	12:15	7:05	5:41	15
7:51	5:26	3:50	12:16	7:06	5:42	16
7:51	5:27	3:50	12:17	7:06	5:42	17
7:51	5:27	3:51	12:17	7:07	5:43	18
7:52	5:28	3:51	12:18	7:08	5:43	19
7:52	5:28	3:51	12:18	7:09	5:44	20
7:53	5:28	3:52	12:19	7:09	5:44	21
7:53	5:29	3:52	12:19	7:09	5:45	22
7:54	5:29	3:53	12:20	7:10	5:46	23
7:54	5:30	3:53	12:20	7:10	5:46	24
7:55	5:30	3:54	12:21	7:11	5:46	25
7:55	5:31	3:54	12:21	7:11	5:47	26
6:56	5:32	3:55	12:22	7:11	5:47	27
6:57	5:32	3:56	12:22	7:12	5:47	28
6:57	5:33	3:56	12:23	7:13	5:48	29
6:58	5:33	3:57	12:23	7:13	5:48	30
6:58	5:34	3:58	12:24	7:13	5:49	31

August

اگست

وقت فجر		طلوع آفتاب		وقت ظہر		وقت عصر		وقت مغرب		وقت عشاء		تاریخ
منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	
4:12		5:41		12:27		5:12		7:13		8:41		1
4:13		5:41		12:27		5:12		7:12		8:40		2
4:14		5:42		12:27		5:12		7:12		8:39		3
4:15		5:43		12:27		5.12		7:11		8:38		4
4:16		5:43		12:27		5:11		7:10		8:37		5
4:17		5:44		12:27		5:11		7:09		8:36		6
4:18		5:45		12:27		5:11		7:08		8:35		7
4:19		5:45		12:27		5:10		7:08		8:34		8
4:19		5:46		12:27		5:10		7:07		8:33		9
4:20		5:46		12:26		5:09		7:06		8:32		10
4:21		5:47		12:26		5:09		7:05		8:31		11
4:22		5:47		12:26		5:09		7:04		8:30		12
4:23		5:48		12:26		5:08		7:03		8:29		13
4:23		5:48		12:26		5:08		7:02		8:28		14
4:24		5:49		12:26		5:07		7:01		8: 26		15
4:25		5:50		12:25		5:07		7:00		8:25		16
4:26		5:51		12:25		5:06		6:59		8:24		17
4:26		5:51		12:25		5:05		6:59		8:23		18
4:27		5:52		12:25		5:04		6:58		8:22		19
4:28		5:52		12:25		5:04		6:57		8:20		20
4:29		5:52		12:24		5:03		6:56		8:19		21
4:30		5:53		12:24		5:02		6:55		8:18		22
4:30		5:53		12:24		5:02		6:54		8:17		23
4:31		5:54		12:24		5:01		6:53		8:15		24
4:32		5:55		12:23		5:01		6:52		8:14		25
4:33		5:55		12:23		5:01		6:50		8:13		26
4:33		5:56		12:23		4:59		6:49		8:11		27
4:34		5:56		12:22		4:58		6:48		8:10		28
4:35		5:57		12:22		4:57		6:47		8:09		29
4:35		5:57		12:22		4:57		6:46		8:08		30
4:36		5:58		12:22		4:56		6:45		8:06		31

September

ستمبر

وقت فجر		طلوع آفتاب		وقت ظہر		وقت عصر		وقت مغرب		وقت عشاء		تاریخ
منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	
4:37		5:58		12:21		4:55		6:44		8:05		1
4:37		5:58		12:21		4:54		6:43		8:04		2
4:38		6:59		12:21		4:54		6:42		8:03		3
4;39		6:00		12:20		4.53		6:40		8:01		4
4:39		6:00		12:20		4:52		6:39		8:00		5
4:40		6:01		12:20		4:51		6:38		7:59		6
4:41		6:01		12:19		4:50		6:37		7:57		7
4:41		6:02		12:19		4:49		6:36		7:56		8
4:42		6:02		12:19		4:48		6:35		7:55		9
4:43		6:03		12:18		4:48		6:33		7:53		10
4:43		6:03		12:18		4:47		6:32		7:52		11
4:44		6:04		12:18		4:46		6:31		7:51		12
4:44		6:04		12:17		4:45		6:30		7:50		13
4:45		6:05		12:17		4:44		6:29		7:48		14
4:46		6:05		12:17		4:43		6:27		7: 47		15
4:46		6:06		12:16		4:42		6:26		7:45		16
4:47		6:06		12:16		4:41		6:25		7:44		17
4:48		6:07		12:15		4:40		6:24		7:43		18
4:49		6:08		12:15		4:39		6:22		7:41		19
4:49		6:08		12:15		4:38		6:21		7:40		20
4:49		6:08		12:14		4:37		6:20		7:39		21
4:50		6:09		12:14		4:36		6:19		7:38		22
4:50		6:09		12:14		4:35		6:18		7:37		23
4:51		6:09		12:13		4:35		6:17		7:36		24
4:51		6:10		12:13		4:34		6:16		7:34		25
4:52		6:10		12:13		4:33		6:15		7:33		26
4:52		6:11		12:12		4:32		6:13		7:32		27
4:53		6:11		12:12		4:31		6:12		7:31		28
4:53		6:12		12:12		4:30		6:11		7:30		29
4:54		6:12		12:11		4:29		6:10		7:28		30

انصاف پر قائم ہوں،۔۔۔۔۔۔ (سورۃ الحدید ۵۷، آیت ۲۵)

تمام زندگی حق و انصاف کی گواہی دیتے رہنا ہر مسلمان پر فرض ہے۔ اللہ تعالیٰ کا فرمان ہے کہ ''اے ایمان والو! عدل و انصاف پر مضبوطی سے جم جانے والے بنو اور اللہ کی خاطر سچائی کے گواہ بنو، چاہے یہ گواہی تمھارے اپنے، تمھارے ماں باپ اور رشتہ داروں کے خلاف ہی کیوں نہ ہو''۔ (سورۃ النسا ۴، آیت ۱۳۵)

۲۔ ہم احسان کا رویہ اختیار کریں:

احسان کا مطلب بہتر یا بہترین طریقے سے معاملات کو انجام دینا ہے۔ چاہے یہ معاملہ عبادات کا ہو یا عام زندگی میں اپنے رویہ اور برتاؤ کا ہو۔ مندرجہ بالا آیت میں احسان کا یہ حکم واضح طور پر دوسرے انسانوں کے ساتھ احسان کا معاملہ کرنے کے سلسلہ میں ہے۔

احسان عربی کا لفظ ہے اور اس کا مادہ حسن ہے جس کا مطلب

خوب یا خوب تر ہے۔ اور کسی عمل یا چیز کا کسی دوسرے عمل یا چیز کے مقابلے خوب تر ہونا احسن ہونا ہے۔ چنانچہ جب انسان اس بات کی کوشش کرے کہ اس کا عمل ہر معاملہ میں احسن ہو تو اس کیفیت اور کوشش کو احسان کہتے ہیں۔ جیسے کوئی مرد/عورت اگر اس طرح نماز ادا کرنے کی کوشش کرے کہ وہ نماز کا حق ادا کر سکے اور ہر رکن کی ادائیگی احسن طریقے پر ہو تو اسے احسان والی نماز کہتے ہیں۔

معاملات میں احسان کا رویہ اختیار کرنے کا مطلب دراصل یہ ہے کہ آدمی اپنے اوپر عائد ذمہ داری سے بھی زیادہ کچھ کرنے کی کوشش کرے۔ مثال کے طور پر اگر کوئی دوکاندار سامان تولتے یا ناپتے وقت مال کھینچ لیتا ہے، ڈنڈی مارتا ہے اور کم ناپتا یا تولتا ہے تو وہ گنہ گار اور مجرم ہے، اور اگر وہ پورا پورا تول یا ناپ کر دیتا ہے تو وہ ایک منصفانہ اور جائز معاملہ کرتا ہے، لیکن اگر وہ کچھ بڑھا کر ناپ یا تول دیتا ہے تو گویا وہ احسان کا معاملہ کرتا ہے۔ کوئی ملازم اپنے فرائض اور ذمہ

ضروری ہے۔

اللہ نے کھلے اور چھپے فحاشی سے بچنے کا حکم دیا ہے۔ اللہ تعالیٰ کا فرمان ہے کہ" فحش کاموں/ باتوں کے قریب بھی نہ جاؤ چاہے وہ کھلے ہوں یا چھپے"۔ (سورۃ الانعام ۶، آیت ۱۵۱)۔

۲۔ ہم منکر سے بچیں: منکر معروف کی ضد ہے۔ ہر بھلی اور اچھی بات معروف ہوتی ہے۔ معروف کا مطلب ہی یہ ہے کہ اس کے اچھی اور بھلی بات ہونے میں کسی کو کوئی شک نہ ہو۔ ہر فرد کے نزدیک اور ہر سماج میں اسے اچھا اور بھلا کام سمجھا جاتا ہو۔ اس کے برخلاف جو باتیں اور کام عام طور سے برے سمجھے جاتے ہیں انہیں منکر کہا جاتا ہے۔ قرآن وحدیث کی زبان میں ہر وہ بات اور کام منکر ہے جسے اللہ اور اس کے رسولؐ نے ناپسند کیا ہو اور اسے نہ کرنے کی تعلیم دی ہو۔ یہ باتیں عام طور سے وہی ہیں جنہیں انسان کا دل اور انسان کا

ضمیر برا کہتا ہے۔ جھوٹ بولنا، دھوکہ دینا، کسی کو نقصان پہنچانا، دوسروں کا مال چھیننا یا فریب کاری سے حاصل کرنا، چوری کرنا، غیر قانونی کام کرنا، رشوت لینا، اجرت لے کر کام نہ کرنا یا کام لے کر اجرت نہ دینا، قرض لینا اور واپس نہ کرنا، غرض ایسی ساری باتیں جن کو برا کہنے اور سمجھنے کے لئے کسی تعلیم، نظرئے اور فلسفہ کی ضرورت نہ ہو، سب منکرات ہیں

اللہ تعالیٰ اس آیت میں منکرات سے منع کرتے ہیں۔ ہم مسلمانوں کو اللہ تعالیٰ نے منکرات کو مٹانے اور بھلائیوں کو پھیلانے کے لئے چنا ہے۔ اللہ تعالیٰ قران کریم میں ایمان والوں سے فرماتے ہیں کہ تم سب سے بہتر قوم ہو جسے انسانوں کے لئے تشکیل دیا گیا ہے کہ تم اچھے کاموں و باتوں کا حکم دیتے ہو اور برے کاموں و باتوں سے روکتے ہو۔

(سورۃ آل عمران ۳، آیت ۱۱۰)

داریاں پوری پوری ادا کرتا ہے اور ہرگز نہیں چاہتا کہ رتی بھر وقت یا رتی بھر محنت تھوڑی زائد صرف کرے تو وہ احسان کی اس اعلیٰ صفت سے محروم ہے۔ کوئی آجر (Employer) اگر اپنے ملازمین (Employees) کو طے شدہ اجرت سے زیادہ کبھی کچھ نہیں دینا چاہتا اور ایک سخت و کھردرا، غیر ہمدردانہ رویہ رکھتا ہے، وقت یا محنت کی معمولی سی کمی پر بھی اس کی اجرت میں کٹوتی کرنا نہیں بھولتا تو یہ بھی احسان کی اس اعلیٰ صفت سے محروم ہے۔ احسان کی ایک مثال یہ ہے کہ کسی سے ضرورت کے وقت قرض لینے والا قرض کی واپسی کے وقت اپنی انتہائی ممنونیت کا اظہار کرے اور کوشش کرے کہ اپنی مرضی اور خوشی سے واپس کی جانے والی چیز یا رقم کو بڑھا کر یا کسی تحفے کے ساتھ پیش کرے۔ دراصل احسان اپنے حق میں سے دوسرے کو خوشی کے ساتھ کچھ پیش کرنے کا نام ہے اور اس کا مقصود دوسرے انسان کی دل جوئی اور دل داری ہے، اس کے اوپر اپنی بڑائی جتانے کا جذبہ اس میں

موجود نہ ہو بلکہ اس کے بدلے اللہ سے اجر کی امید رکھے۔

احسان کا یہ عمل انسانی معاشرے میں ایک دوسرے کے لئے خیر خواہی اور محبت کے جذبے کو بڑھاتا ہے اور ایک دوسرے پر اعتماد کو مضبوط کرتا ہے۔ کیوں کہ جب ہر شخص دوسرے کے ساتھ بھلائی اور احسان سے پیش آئے گا تو دوسروں کے ہاتھوں خود کو بے وقوف بنائے جانے، محروم کئے جانے اور نقصان پہنچنے کا اندیشہ نہیں رہے گا۔ اس طرح معاشرہ مضبوط ہوتا ہے اور ترقی کرتا ہے۔ چنانچہ اللہ تعالیٰ ہمیں ہر معاملے میں احسان سے کام لینے کا حکم دیتے ہیں۔

۳۔ ہم اپنے رشتہ داروں کے ساتھ اچھا سلوک کریں:

رشتہ داروں کے ساتھ رابطہ، حسن سلوک اور سخاوت و فیاضی کا معاملہ کرنے کی بہت زیادہ تاکید قرآن میں کی گئی ہے۔ اس آیت کی تفسیر میں مولانا ابوالاعلیٰ مودودیؒ لکھتے ہیں کہ ''اس کا

مطلب صرف یہی نہیں ہے کہ آدمی اپنے رشتہ داروں کے ساتھ اچھا برتاؤ کرے اور خوشی وغم میں ان کے ساتھ شریک ہو اور جائز حدود کے اندر اُن کی حمایت و مدد کرے۔ بلکہ اس کے معنی یہ بھی ہیں کہ ہر صاحب استطاعت شخص اپنے مال پر صرف اپنی ذات اور اپنے بال بچوں کے ہی حقوق نہ سمجھے بلکہ اپنے رشتہ داروں کے حقوق بھی تسلیم کرے۔ اللہ کی شریعت ہر خاندان کے خوشحال افراد کو اس بات کا ذمہ دار قرار دیتی ہے کہ وہ اپنے خاندان کے لوگوں کو بھوکا ننگا نہ چھوڑیں۔ اللہ کی نگاہ میں کسی معاشرے کی اس سے بدتر کوئی بات نہیں کہ اس کے اندر ایک شخص عیش کر رہا ہو اور اسی کے خاندان میں اس کے اپنے بھائی بند روٹی کپڑے تک کو محتاج ہوں۔ شریعت کی رو سے ہر خاندان کے غریب افراد کا پہلا حق اپنے خاندان کے خوش حال افراد پر ہے۔ اور ہر خاندان کے خوشحال افراد پر پہلا حق ان کے اپنے غریب رشتہ داروں کا ہے۔'' (تفہیم القرآن)

ہمیں یہ بات بھی سمجھنا چاہئے کہ صرف مال سے مدد کر دینا ہی کافی نہیں ہے بلکہ اپنے وقت، اپنی صلاحیت وقوت اور اپنے اثر و رسوخ سے بھی رشتہ داروں کو جائز فائدہ پہنچانا اور انہیں اپنے دائرہ محبت میں شامل رکھنا ہمارے اوپر واجب ہے۔

اس آیت کے دوسرے حصے میں اللہ سبحانہ وتعالیٰ ہمیں تین برے کاموں سے بچتے رہنے کا حکم دیتے ہیں :

۱۔ **ہم فحش کاموں / باتوں سے بچیں:** فحش بے شرمی کو کہتے ہیں۔ فحش کاموں یا باتوں کا تعلق انسان کے شہوانی جذبے سے ہے۔ شہوت یا شہوانی جذبہ انسان کے اندر اللہ تعالی نے انسانی نسل کو آگے بڑھانے کے مقصد سے رکھا ہے جس کے لئے نکاح کے ذریعہ جائز رشتہ قائم کرنے کا قانون ہے۔ اس قانون اور جائز رشتہ

کے دائرے سے باہر اس جذبہ کو جتانے والی ہر وہ چھوٹی بڑی بات جو ایک ذمہ دار و شریف انسان بطور خاص ایک مسلمان مرد / عورت کو نہیں کرنی چاہئے وہ فحش ہے۔ فحش سے روکنے والی اخلاقی قوت کو حیا کہتے ہیں اس لئے ہر فحش بات بے حیائی ہے اور بے حیائی کو ظاہر کرنے والی ہر بات فحش ہے۔ وہ بدگوئی اور بدزبانی جسے ہم گالی کہتے ہیں ان میں سے اکثر کا اشارہ شہوت اور فحاشی کی طرف ہوتا ہے۔ گالی بکنے والا خبیث اور بے حیا انسان کسی کی ماں کی شرم گاہ کی طرف اشارہ کرتا ہے، کسی کی بہن کی شرم گاہ کی طرف اشارہ کرتا ہے یا خود اپنی اور اپنے باپ دادا کی شرم گاہ کی طرف اشارہ کرتا ہے، اور گالیاں بکنے کی عادت رکھنے والا بے حیا اور بے غیرت انسان جانے انجانے خود اپنی ماں، اپنی بہن اور اپنے باپ دادا کی طرف گھٹیا اشارے اور مجرمانہ ارادوں کا اظہار کرتا ہے۔

چنانچہ گالی دینا ایک بہت فحش عادت ہے، مگر یہ عادت اتنی عام ہے کہ لوگ اسے گناہ سمجھنے کا بھی احساس نہیں رکھتے۔ ظلم تو یہ ہے کہ

مسجدوں میں بیٹھنے والے، ذکر و اذکار کرنے والے لوگوں میں بھی ایسے موجود ہوتے ہیں کہ ذرا سی بات پر کوئی گالی دینا ان کے لئے کوئی بڑی بات نہیں۔ ایسے لوگوں کو سمجھنا چاہئے کہ اللہ نے فحاشی سے بچنے کا حکم دیا ہے اور گالیاں دینا بڑی فحش بات ہے۔

اس کے علاوہ ایسی گفتگو، ایسے فقرے، اشارے اور کنائے یا ایسی حرکتیں بھی جو حیا کے خلاف ہوں اور جن کا سرا کہیں نہ کہیں جا کر شہوت اور جنسیت کی غیر قانونی حرکت سے ملتا ہو، فحاشی ہے۔ عشق بازی کی تحریک دینے والے اشعار، افسانے اور ناول بھی فحش نگاری کے زمرے میں آتے ہیں اور جن اشعار، افسانوں اور ناولوں وغیرہ میں باقاعدہ شہوانی حرکتوں کی منظر نگاری ہوتی ہے وہ تو براہ راست اور بلا شک و شبہ فحش ہیں۔ سینما کی فلمیں اور ٹی وی سیریل (کچھ مستثنیات کو چھوڑ) بالعموم فحش ہوتے ہیں۔ اب تو بچوں کے لئے بننے والے کارٹونوں میں بھی فحش نگاری شامل ہونے لگی ہے، جن سے بچوں کو بچانا

۳۔ ہم بغی سے بچیں: بغی ظلم وزیادتی یا جبر وستم کرنے کو کہتے ہیں۔ دوسرے انسانوں پر اپنا بے جا رعب جمانا، انہیں دہشت میں مبتلا کرنا، ستانا، دبانا، مارنا پیٹنا، ان سے زبردستی کام لینا، ان کی آزادی کو چھین لینا، عزت تار تار کرنا، اس طرح کے سارے افعال بغی میں آتے ہیں۔ اللہ تعالیٰ اپنے بندوں کو حکم دیتے ہیں کہ وہ ظلم وزیادتی اور بغی سے دور رہیں۔

چنانچہ، اللہ تعالیٰ کے پاک کلام کی یہ آیت سماج کو بہتر بنانے کے لئے ایک نسخہ ہے، اسی لئے ہمیں ہر ہفتہ اللہ تعالیٰ کا یہ پیغام یاد دلایا جاتا ہے تاکہ ہم سب لوگ بار بار اس پیغام کی اہمیت کو سمجھیں اور اس پر ہمہ وقت عمل کرتے رہیں۔ اللہ تعالیٰ ہم سب کو اس عظیم قرآنی پیغام کو سمجھنے اور اس پر عمل کرنے کی توفیق دے۔ آمین

جنوری January

تاریخ	وقت فجر	طلوع آفتاب	وقت ظہر	وقت عصر	وقت مغرب	وقت عشاء
	منٹ گھنٹہ	منٹ گھنٹہ	منٹ گھنٹہ	منٹ گھنٹہ	منٹ گھنٹہ	منٹ گھنٹہ
1	5:49	7:13	12:24	3:58	5:35	6:59
2	5:50	7:14	12:25	3:59	5:36	6:59
3	5:50	7:14	12:25	3:59	5:36	7:00
4	5:51	7:14	12:26	4.00	5:37	7:01
5	5:51	7:15	12:26	4:01	5:38	7:01
6	5:51	7:15	12:27	4:01	5:39	7:02
7	5:52	7:15	12:27	4:02	5:40	7:03
8	5:52	7:15	12:28	4:03	5:40	7:04
9	5:52	7:15	12:28	4:04	5:41	7:05
10	5:52	7:15	12:28	4:05	5:41	7:05
11	5:52	7:15	12:29	4:05	5:42	7:06
12	5:52	7:15	12:29	4:06	5:43	7:07
13	5:52	7:15	12:30	4:07	5:44	7:07
14	5:52	7:15	12:30	4:08	5:45	7:08
15	5:52	7:15	12:31	4:09	5:45	7:09
16	5:52	7:15	12:31	4:10	5:46	7:10
17	5:52	7:15	12:31	4:11	5:47	7:11
18	5:52	7:15	12:32	4:12	5:48	7:11
19	5:52	7:15	12:32	4:12	5:49	7:12
20	5:52	7:14	12:32	4:13	5:50	7:13
21	5:52	7:14	12:33	4:13	5:51	7:13
22	5:52	7:14	12:33	4:14	5:52	7:14
23	5:52	7:14	12:33	4:15	5:52	7:15
24	5:52	7:14	12:33	4:16	5:53	7:16
25	5:51	7:13	12:33	4:17	5:54	7:16
26	5:51	7:13	12:34	4:18	5:55	7:17
27	5:51	7:12	12:34	4:18	5:55	7:17
28	5:51	7:12	12:34	4:19	5:56	7:18
29	5:51	7:11	12:34	4:20	5:57	7:18
30	5:50	7:11	12:34	4:21	5:58	7:19
31	5:50	7:11	12:34	4:22	5:59	7:20

June جون

تاریخ	وقت فجر		طلوع آفتاب		وقت ظہر		وقت عصر		وقت مغرب		وقت عشاء	
	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ
1	51	3	24	5	19	12	08	5	14	7	46	8
2	51	3	23	5	19	12	08	5	14	7	47	8
3	51	3	23	5	19	12	08	5	15	7	47	8
4	50	3	23	5	19	12	08.5		15	7	48	8
5	50	3	23	5	19	12	09	5	16	7	49	8
6	50	3	23	5	19	12	09	5	17	7	49	8
7	50	3	23	5	20	12	09	5	17	7	50	8
8	49	3	23	5	20	12	10	5	17	7	50	8
9	49	3	23	5	20	12	10	5	18	7	51	8
10	49	3	22	5	20	12	10	5	18	7	51	8
11	49	3	22	5	20	12	10	5	19	7	52	8
12	48	3	22	5	20	12	11	5	19	7	52	8
13	48	3	22	5	21	12	11	5	19	7	53	8
14	48	3	22	5	21	12	11	5	19	7	53	8
15	48	3	22	5	21	12	12	5	20	7	53	8
16	49	3	23	5	21	12	12	5	20	7	54	8
17	49	3	23	5	22	12	12	5	20	7	54	8
18	49	3	23	5	22	12	12	5	21	7	55	8
19	49	3	23	5	22	12	13	5	21	7	55	8
20	49	3	23	5	22	12	13	5	21	7	55	8
21	49	3	24	5	22	12	13	5	22	7	56	8
22	49	3	24	5	23	12	14	5	22	7	56	8
23	49	3	24	5	23	12	14	5	22	7	56	8
24	50	3	24	5	23	12	14	5	23	7	56	8
25	50	3	25	5	23	12	15	5	23	7	56	8
26	50	3	25	5	24	12	15	5	23	7	56	8
27	50	3	25	5	24	12	15	5	24	7	57	8
28	51	3	25	5	24	12	16	5	24	7	57	8
29	51	3	26	5	24	12	16	5	24	7	57	8
30	52	3	26	5	25	12	16	5	25	7	57	8

July جولائی

تاریخ	وقت فجر		طلوع آفتاب		وقت ظہر		وقت عصر		وقت مغرب		وقت عشاء	
	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ
1	52	3	26	5	24	12	15	5	23	7	57	8
2	52	3	26	5	25	12	15	5	23	7	57	8
3	53	3	27	5	25	12	15	5	23	7	57	8
4	53	3	27	5	25	12	5.15		23	7	57	8
5	54	3	27	5	25	12	15	5	23	7	56	8
6	54	3	28	5	25	12	15	5	23	7	56	8
7	55	3	28	5	26	12	16	5	23	7	56	8
8	55	3	29	5	26	12	16	5	22	7	56	8
9	56	3	29	5	26	12	16	5	22	7	55	8
10	57	3	30	5	26	12	16	5	22	7	55	8
11	57	3	30	5	26	12	16	5	22	7	55	8
12	58	3	30	5	26	12	16	5	22	7	54	8
13	58	3	31	5	26	12	16	5	22	7	54	8
14	59	3	31	5	27	12	16	5	21	7	53	8
15	00	4	32	5	27	12	16	5	21	7	53	8
16	00	4	32	5	27	12	16	5	21	7	53	8
17	01	4	33	5	27	12	16	5	20	7	52	8
18	02	4	33	5	27	12	16	5	20	7	52	8
19	03	4	34	5	27	12	16	5	20	7	51	8
20	03	4	34	5	27	12	16	5	19	7	51	8
21	04	4	35	5	27	12	16	5	19	7	50	8
22	05	4	36	5	27	12	15	5	18	7	50	8
23	06	4	36	5	27	12	15	5	18	7	49	8
24	06	4	37	5	27	12	15	5	17	7	48	8
25	07	4	37	5	27	12	14	5	17	7	47	8
26	08	4	38	5	27	12	14	5	16	7	46	8
27	09	4	38	5	27	12	13	5	15	7	45	8
28	10	4	39	5	27	12	13	5	15	7	44	8
29	10	4	39	5	27	12	13	5	14	7	44	8
30	11	4	40	5	27	12	12	5	14	7	43	8
31	12	4	40	5	27	12	12	5	13	7	42	8

February

فروری

تاریخ	وقت فجر		طلوع آفتاب		وقت ظہر		وقت عصر		وقت مغرب		وقت عشاء	
	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ
1	5:50		7:11		12:35		4:23		6:00		7:21	
2	5:50		7:11		12:35		4:23		6:00		7:21	
3	5:49		7:10		12:35		4:24		6:01		7:22	
4	5:48		7:09		12:35		4.25		6:02		7:22	
5	5:47		7:08		12:35		4:26		6:03		7:23	
6	5:47		7:07		12:35		4:27		6:04		7:24	
7	5:46		7:06		12:35		4:27		6:04		7:25	
8	5:46		7:06		12:35		4:28		6:05		7:25	
9	5:45		7:05		12:35		4:29		6:06		7:26	
10	5:45		7:05		12:35		4:30		6:07		7:27	
11	5:44		7:04		12:35		4:30		6:08		7:28	
12	5:43		7:03		12:36		4:31		6:08		7:28	
13	5:43		7:03		12:36		4:32		6:09		7:29	
14	5:42		7:02		12:36		4:33		6:10		7:29	
15	5:41		7:01		12:36		4:33		6:10		7:30	
16	5:41		7:00		12:36		4:34		6:11		7:31	
17	5:40		6:59		12:36		4:35		6:12		7:31	
18	5:39		6:58		12:35		4:35		6:13		7:32	
19	5:39		6:57		12:35		4:36		6:14		7:32	
20	5:38		6:57		12:35		4:36		6:14		7:33	
21	5:37		6:56		12:35		4:37		6:15		7:34	
22	5:36		6:55		12:35		4:38		6:15		7:34	
23	5:35		6:54		12:34		4:38		6:16		7:35	
24	5:34		6:53		12:34		4:39		6:17		7:35	
25	5:33		6:52		12:34		4:39		6:17		7:36	
26	5:32		6:51		12:34		4:40		6:18		7:37	
27	5:31		6:50		12:34		4:40		6:19		7:37	
28	5:30		6:49		12:34		4:41		6:19		7:38	
29	5:29		6:49		12:35		4:41		6:20		7:38	

March

مارچ

تاریخ	وقت فجر		طلوع آفتاب		وقت ظہر		وقت عصر		وقت مغرب		وقت عشاء	
	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ
1	5:29		6:48		12:34		4:42		6:20		7:39	
2	5:28		6:47		12:33		4:42		6:21		7:40	
3	5:27		6:46		12:33		4:43		6:21		7:41	
4	5:26		6:45		12:33		4.43		6:22		7:41	
5	5:25		6:44		12:33		4:43		6:23		7:41	
6	5:24		6:43		12:33		4:44		6:23		7:42	
7	5:23		6:42		12:27		4:44		6:24		7:42	
8	5:22		6:41		12:28		4:45		6:25		7:42	
9	5:21		6:40		12:28		4:45		6:25		7:43	
10	5:20		6:39		12:28		4:46		6:26		7:44	
11	5:19		6:38		12:29		4:46		6:26		7:45	
12	5:18		6:37		12:29		4:47		6:27		7:46	
13	5:17		6:36		12:30		4:47		6:27		7:46	
14	5:16		6:34		12:30		4:47		6:28		7:46	
15	5:15		6:33		12:31		4:48		6:28		7:47	
16	5:14		6:32		12:31		4:48		6:29		7:47	
17	5:12		6:31		12:31		4:48		6:30		7:48	
18	5:11		6:30		12:32		4:49		6:31		7:49	
19	5:10		6:28		12:32		4:49		6:31		7:49	
20	5:08		6:27		12:32		4:50		6:32		7:50	
21	5:07		6:26		12:33		4:50		6:32		7:51	
22	5:06		6:25		12:33		4:50		6:33		7:52	
23	5:05		6:24		12:33		4:51		6:33		7:52	
24	5:04		6:23		12:33		4:51		6:34		7:53	
25	5:02		6:22		12:33		4:51		6:34		7:54	
26	5:01		6:20		12:34		4:52		6:35		7:54	
27	5:00		6:19		12:34		4:52		6:36		7:55	
28	5:59		6:18		12:34		4:52		6:36		7:56	
29	5:57		6:16		12:34		4:52		6:37		7:56	
30	5:56		6:15		12:34		4:53		6:37		7:56	
31	5:55		6:14		12:34		4:53		6:38		7:56	

April

اپریل

تاریخ	وقت فجر		طلوع آفتاب		وقت ظہر		وقت عصر		وقت مغرب		وقت عشاء	
	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ
1	4:53		6:13		12:25		4:53		6:39		7:58	
2	4:52		6:12		12:25		4:54		6:39		7:59	
3	4:51		6:11		12:25		4:54		6:41		8:00	
4	4:50		6:10		12:24		4.54		6:40		8:00	
5	4:48		6:08		12:24		4:54		6:41		8:01	
6	4:47		6:07		12:24		4:55		6:42		8:02	
7	4:46		6:06		12:23		4:55		6:42		8:02	
8	4:45		6:05		12:23		4:55		6:43		8:03	
9	4:43		6:04		12:23		4:55		6:43		8:04	
10	4:42		6:03		12:22		4:55		6:43		8:04	
11	4:41		6:02		12:22		4:56		6:44		8:05	
12	4:39		6:01		12:22		4:56		6:45		8:06	
13	4:38		5:59		12:22		4:56		6:45		8:07	
14	4:37		5:58		12:22		4:56		6:46		8:07	
15	4:36		5:57		12:21		4:57		6:46		8:08	
16	4:34		5:56		12:21		4:57		6:47		8:09	
17	4:33		5:55		12:21		4:57		6:47		8:10	
18	4:32		5:54		12:21		4:57		6:48		8:10	
19	4:31		5:53		12:20		4:58		6:49		8:11	
20	4:30		5:52		12:20		4:58		6:49		8:12	
21	4:28		5:51		12:20		4:58		6:50		8:12	
22	4:27		5:50		12:19		4:58		6:50		8:13	
23	4:26		5:49		12:19		4:58		6:51		8:14	
24	4:25		5:48		12:19		4:59		6:51		8:15	
25	4:24		5:47		12:19		4:59		6:52		8:16	
26	4:22		5:46		12:19		4:59		6:52		8:17	
27	4:21		5:46		12:19		4:59		6:53		8:17	
28	4:20		5:45		12:19		4:59		6:54		8:18	
29	4:19		5:44		12:18		5:00		6:55		8:19	
30	4:18		5:43		12:18		5:00		6:55		8:20	

May

مئی

تاریخ	وقت فجر		طلوع آفتاب		وقت ظہر		وقت عصر		وقت مغرب		وقت عشاء	
	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ
1	4:17		5:42		12:18		5:00		6:56		8:21	
2	4:15		5:41		12:18		5:00		6:56		8:21	
3	4:14		5:40		12:18		5:00		6:57		8:21	
4	4:13		5:39		12:18		5.00		6:57		8:23	
5	4:12		5:39		12:18		5:01		6:58		8:24	
6	4:11		5:38		12:18		5:01		6:59		8:25	
7	4:10		5:37		12:18		5:01		6:59		8:26	
8	4:09		5:36		12:17		5:01		7:00		8:27	
9	4:08		5:35		12:17		5:02		7:00		8:27	
10	4:07		5:34		12:17		5:02		7:01		8:28	
11	4:06		5:34		12:17		5:02		7:02		8:29	
12	4:05		5:33		12:17		5:02		7:02		8:30	
13	4:04		5:32		12:17		5:02		7:03		8:31	
14	4:03		5:31		12:17		5:03		7:04		8:32	
15	4:02		5:31		12:17		5:03		7:04		8:33	
16	4:02		5:30		12:17		5:03		7:05		8:34	
17	4:01		5:30		12:17		5:04		7:05		8:34	
18	4:00		5:29		12:17		5:04		7:06		8:35	
19	3:59		5:29		12:17		5:04		7:06		8:36	
20	3:59		5:28		12:17		5:04		7:07		8:37	
21	3:58		5:28		12:17		5:04		7:07		8:38	
22	3:57		5:27		12:17		5:05		7:08		8:38	
23	3:57		5:27		12:17		5:05		7:09		8:39	
24	3:56		5:26		12:18		5:05		7:09		8:40	
25	3:55		5:26		12:18		5:06		7:10		8:40	
26	3:55		5:25		12:18		5:06		7:10		8:41	
27	3:54		5:25		12:18		5:06		7:11		8:41	
28	3:53		5:25		12:18		5:06		7:11		8:42	
29	3:53		5:24		12:18		5:07		7:12		8:43	
30	3:52		5:24		12:18		5:07		7:12		8:43	
31	3:52		5:24		12:18		5:07		7:13		8:44	

October

اکتوبر

تاریخ	وقت فجر		طلوع آفتاب		وقت ظہر		وقت عصر		وقت مغرب		وقت عشاء	
	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ
1	4:54		6:13		12:11		4:28		6:09		7:27	
2	4:55		6:13		12:11		4:27		6:07		7:26	
3	4:55		6:14		12:10		4:26		6:06		7:24	
4	4:56		6:15		12:10		4.25		6:05		7:23	
5	4:57		6:15		12:10		4:24		6:04		7:22	
6	4:57		6:15		12:09		4:23		6:03		7:21	
7	4:58		6:16		12:09		4:22		6:02		7:20	
8	4:58		6:17		12:09		4:21		6:00		7:19	
9	4:59		6:17		12:09		4:20		5:59		7:18	
10	4:59		6:18		12:08		4:19		5:58		7:17	
11	5:00		6:18		12:08		4:18		5:57		7:16	
12	5:00		6:19		12:08		4:17		5:56		7:15	
13	5:01		6:20		12:07		4:16		5:55		7:14	
14	5:01		6:21		12:07		4:15		5:54		7:13	
15	5:02		6:21		12:07		4:14		5:53		7:11	
16	5:03		6:21		12:07		4:13		5:52		7:10	
17	5:03		6:22		12:07		4:12		5:51		7:09	
18	5:04		6:23		12:06		4:11		5:50		7:08	
19	5:04		6:23		12:06		4:11		5:49		7:07	
20	5:05		6:23		12:06		4:10		5:48		7:06	
21	5:06		6:24		12:06		4:09		5:47		7:05	
22	5:06		6:25		12:06		4:08		5:46		7:04	
23	5:07		6:26		12:06		4:07		5:45		7:03	
24	5:07		6:26		12:05		4:06		5:44		7:02	
25	5:08		6:27		12:05		4:05		5:43		7:01	
26	5:09		6:28		12:05		4:05		5:42		7:00	
27	5:09		6:29		12:05		4:04		5:41		6:59	
28	5:10		6:29		12:05		4:03		5:40		6:59	
29	5:10		6:30		12:05		4:02		5:39		6:58	
30	5:11		6:30		12:05		4:01		5:38		6:58	
31	5:11		6:31		12:05		4:01		5:38		6:58	

November

نومبر

تاریخ	وقت فجر		طلوع آفتاب		وقت ظہر		وقت عصر		وقت مغرب		وقت عشاء	
	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ
1	5:12		6:32		12:05		4:00		5:37		6:57	
2	5:13		6:33		12:05		3:59		5:36		6:56	
3	5:14		6:33		12:05		3:58		5:35		6:55	
4	5:15		6:34		12:05		3.58		5:34		6:55	
5	5:15		6:35		12:05		3:57		5:34		6:54	
6	5:16		6:36		12:05		3:56		5:33		6:53	
7	5:17		6:36		12:05		3:56		5:32		6:53	
8	5:17		6:37		12:05		3:55		5:32		6:52	
9	5:17		6:38		12:05		3:54		5:31		6:52	
10	5:18		6:39		12:05		3:54		5:31		6:52	
11	5:19		6:39		12:05		3:53		5:30		6:51	
12	5:19		6:40		12:05		3:53		5:29		6:50	
13	5:20		6:41		12:05		3:52		5:29		6:50	
14	5:20		6:42		12:05		3:52		5:28		6:49	
15	5:21		6:42		12:06		3:51		5:28		6:49	
16	5:22		6:43		12:06		3:51		5:27		6:49	
17	5:22		6:44		12:06		3:51		5:27		6:48	
18	5:24		6:45		12:06		3:50		5:26		6:48	
19	5:24		6:46		12:06		3:50		5:26		6:48	
20	5:25		6:46		12:07		3:49		5:26		6:48	
21	5:25		6:47		12:07		3:49		5:26		6:48	
22	5:26		6:48		12:07		3:49		5:25		6:47	
23	5:27		6:49		12:07		3:48		5:25		6:47	
24	5:27		6:50		12:08		3:48		5:25		6:47	
25	5:28		6:50		12:08		3:48		5:24		6:47	
26	5:29		6:51		12:08		3:47		5:24		6:47	
27	5:29		6:52		12:08		3:47		5:24		6:47	
28	5:30		6:53		12:09		3:47		5:24		6:47	
29	5:30		6:54		12:09		3:47		5:24		6:47	
30	5:31		6:54		12:09		3:47		5:24		6:47	